शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2013

गाजीपुर जनपद (उ.प्र.) में अवस्थापनात्मक विकास नियोजन

डा. अजीत कुमार यादव
प्राचार्य गुरूकुल महाविद्यालय पत्थलगाँव
जिला-जशपुर (छत्तीसगढ़)

शोध संक्षेप

प्रस्तुत शोध प्रपत्र गाजीपुर जनपद में अवस्थापनात्मक विकास नियोजन से संबन्धित है। अध्ययन क्षेत्र मध्य गंगा मैदान के उपजाऊ जलोढ़ मैदान में स्थित है। यहां की 84: जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है, जिसके भरण पोषण का आधार कृषि एवं कृषि आधारित सेवाएं हैं। क्षेत्र में कृषि एवं औद्योगिक विकास से सम्बन्धित अवस्थापनात्मक सुविधाओं का विकास सर्वत्र असमान रूप में पाया जाता है। नगरीय क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक अवस्थापनात्मक सेवाओं के विकास के कारण अवस्थापनात्मक विकास का स्तर उच्च श्रेणी का पाया जाता है जबकि ग्रामीण एवं दूरवर्ती क्षेत्रों में अवस्थापनात्मक विकास का स्तर निम्न श्रेणी का पाया जाता है। यदि क्षेत्र में अवस्थापनात्मक विकास नियोजन किया जाये तो कृषि उत्पादन प्रकिया में वृद्धि एवं उद्योग धन्धों का विकास होने से क्षेत्रवासियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे जिससे उनके जीवन में सुधार होगा तथा क्षेत्र का त्वरित विकास संभव होगा। प्रस्तुत शोध पत्र में इसीका विवेचन किया गया है।

भूमिका

किसी प्रदेश की अर्थव्यवस्था के विकास हेतु अनिवार्य आधारभूत पदार्थ, परिस्थितियां तथा व्यवस्थाएं अवस्थापनात्मक तत्व कहे जाते हैं।1 अवस्थापनात्मक तत्वों के अन्तर्गत किसी देश, समुदाय या संगठन के उन्नत एवं निधिकरण हेतु आधारभूत सुविधाएं, साधन, सेवाएं व्यवस्थाएं सहकारी तथा प्रशासनिक तन्त्र को सम्मिलित किया जाता है। वास्तव में अवस्थापनात्मक तत्व एक समूह बोधक शब्द है, जिसमें किसी भी व्यवस्था में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में सहायक सभी आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तत्व अवस्थाओं, सुविधाओं, आश्रयों एवं स्रोतों को सम्मिलित किया जाता है। किसी प्रदेश या क्षेत्र की अर्थव्यवस्था उसकी विकास प्रक्रिया की गति तथा वर्तमान विकास का भू-वैन्यासिक प्रतिरूप सामान्यतया इन्हीं तत्वों पर आधारित होता है, जिससे ग्रामीण विकास का भू-वैन्यासिक प्रतिरूप स्पष्ट होता है।"2 अवस्थापनात्मक विकास आर्थिक विकास की ऐसी प्रक्रिया है जो किसी राष्ट्र की परम्परागत अर्थव्यवस्था में व्याप्त अवरोधों को दूर करके उसे आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति की नई दिशाएं प्रदान करता है। वर्तमान में औद्योगिक विकास ऐसे विकास का पर्याय बन चुका है जो आधुनिकता एवं वैज्ञानिक तकनीकी से ओत-प्रोत है, जिसमें पिछड़े हुए समाज को ऊपर उठाने की असीम क्षमताएं विद्यामान हैं, जो राष्ट्र भौतिक साधनों से सपन्न होते हुए विपन्न है, वे औद्योगिक विकास के द्वारा अपने विपुल साधनों का कुशलतम उपयोग करके राष्ट्रीय उत्पादन तथा प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि कर सकते हैं। अवस्थापनात्मक तत्व विविध संसाधनों की खोज ,विकास एवं उपयोग हेतु आवश्यक दशाएं उपलब्ध कराकर ग्रामीण विकास की प्रक्रिया को गति प्रदान करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।"3 अवस्थापनात्मक तत्व विकास के वे आधारभूत कारक हैं, जिनके बिना विकास अभिप्रेरक अन्य तत्वों के रहते हुए भी विकास की प्रक्रिया संभव नही है। इस दृष्टि से किसी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था के विकास हेतु अनिवार्य एवं आधारभूत पदार्थ परिस्थितियां तथा व्यवस्थानाएं अवस्थापनात्मक तत्व कहे जाते हैं।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2013

अध्ययन क्षेत्र

गाजीपुर जनपद, उत्तर प्रदेश एवं वाराणसी मण्डल के पूर्वी भाग में 25019' से 25054' उत्तरी अक्षांश एवं 8304' से 83058' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। यह जनपद पूर्व में बिहार राज्य के बक्सर जनपद से, पश्चिम में जौनपुर, दक्षिण में चन्दौली, दक्षिण-पश्चिम में वाराणसी, उत्तर-पश्चिम में आजमगढ, उत्तर में मऊ एवं उत्तर-पूर्व में बलिया जनपद से घिरा हुआ है। जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3,377 वर्ग किमी. है, जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 1.5 प्रतिशत है। इस जनपद की पूर्व-पश्चिम की ओर लम्बाई 89 किमी. एवं उत्तर-दक्षिण की ओर चैड़ाई 59 किमी. है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से गाजीपुर जनपद 5 तहसीलों, 16 विकासखण्डों, 193 न्यायपंचायतों, 1050 ग्रामपंचायतों, 3364 ग्रामों (2665 आबाद ग्राम एवं 699 गैर आबाद ग्राम) में विभक्त है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 36,22,727 है, जिसमें 18,56,584 पुरूष एवं 17,66,143 महिलाएं हैं। यहां का औसत जनघनत्व 1072 व्यक्ति/वर्ग किमी, साक्षरता 74.27: एवं लिंगानुपात 951 है।

अवस्थापनात्मक विकास के चर

अवस्थापनात्मक तत्व किसी भी क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में अहम भूमिका अदा करते हैं। किसी क्षेत्र के विकास स्तर का निर्धारण उस क्षेत्र में स्थापित अवस्थापनात्मक तत्वों से ही की जाती है। इस तरह ये अवस्थापनात्मक तत्व किसी भी क्षेत्र के विकास में मेरूदण्ड का कार्य करते है।4 वास्तव में अवस्थापनात्मक तत्व ग्रामीण विकास में किस प्रकार अपनी भूमिका अदा करते है यह देखने के लिए ग्रामीण विकास हेतु अवस्थापनात्मक विकास के चरों का चयन किया गया है, जो इस प्रकार हैं।

डाक एवं तार घर - डाकघर का प्रमुख कार्य पत्र और समाचार पत्रों के आदान-प्रदान होता है तथा तारघर के माध्यम से किसी समाचार को टेलीग्राम के द्वारा भेजा जाता है। क्षेत्र में डाकघर एवं तारघरों की संख्या 363 है, जिसमें डाकघर 356 तथा तारघर 7 हैं। जमानियां विकासखण्ड में 32, भावरकोल में 28 एवं विरनों विकासखण्ड में डाक एवं तारघरों की संख्या 14 है।

संचार व्यवस्था - संचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक सूचना व जानकारी भेजी जाती है। यह अपने विचारों को देने तथा अपने आप को दूसरों द्वारा समझे जाने की प्रक्रिया है। क्षेत्र में सार्वजनिक टेलीफोन व व्यक्तिगत टेलीफोन एवं संचार की संख्या 24,054 है। जिसमें गाजीपुर विकासखण्ड में 8,481, सैदपुर में 2,354, मुहम्मदाबाद में 2,178 भदौरा में 2,026 एवं विरनों विकासखण्ड में संचार साधनों की संख्या 405 है।

परिवहन - किसी भी क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में परिवहन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परिवहन एक प्रमुख अवस्थापनात्मक तत्व है जिससे क्षेत्र में आर्थिक विकास, सामाजिक विकास का प्रारूप तैयार किया जा सकता है। क्षेत्र में 606 बस स्टाप, टैक्सी स्टैण्ड एवं रेलवे स्टेशन है। मुहम्मदाबाद विकासखण्ड में 68, देवकली में 51, सैदपुर में 46, भावरकोल में 47, कासिमाबाद में 43 एवं जमानियां में 42 एवं रेवतीपुर विकासखण्ड में परिवहन सुविधाएं 20 है।

प्रति लाख जनसंख्या पर पक्की सड़कों की लम्बाई - क्षेत्र में प्रति लाख जनसंख्या पर पक्की सड़कों की लम्बाई का औसत 115.2 किमी. है। करण्डा विकासखण्ड में 144.4 किमी., मरदह में 138 किमी. भावरकोल में 130.4 किमी., सादात में 130 किमी., मुहम्मदाबाद में 125.6 किमी. एवं

रेवतीपुर विकासखण्ड में पक्की सड़कों की लम्बाई प्रति लाख जनसंख्या पर 90.4 किमी. है। पक्की सड़कों की लम्बाई (किमी. में) - किसी भी क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में परिवहन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जबकि परिवहन के साधनों के लिए पक्की सड़कों के महत्व को समन्वित ग्रामीण विकास में नकारा नहीं जा सकता है। क्षेत्र में पक्की सड़कों की कुल लम्बाई 3230 किमी. है। सैदपुर विकासखण्ड में 250 किमी, सादात में 238 किमी., मुहम्मदाबाद में 235 किमी., मनिहारी में 223 किमी. एवं रेवतीपुर विकासखण्ड में 137 किमी. पक्की सड़कें हैं। विद्युतिकृत ग्राम - क्षेत्र में औद्योगिक इकाइयों के संचालन हेतु कृषि एवं सिंचाई आदि कार्यों के सम्पादन हेतु विद्युत की महती उपयोगिता होती है। अतः क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में मात्र 35.40: ग्राम ही विद्युतकृत हैं। रेवतीपुर एवं भदौरा विकासखण्ड में 100-100:, जमानियां में 74.00:, करण्डा में 40.40: , सादात में 38.80: एवं विरनों विकासखण्ड में 22.70: विद्युत कृत ग्राम है। बैंकिंग व्यवस्था - किसी क्षेत्र में मुद्रा संचय का कार्य बैंकिंग व्यवस्था द्वारा किया जाता है। यहां पर कुल बैंकों की संख्या 109 है। क्षेत्र के देवकली विकासखण्ड में 9, जमानियां में 8, मनिहारी सैदपुर भावरकोल जमानियां में 8-8 बैंक एवं विरनों, मरदह, गाजीपुर, करण्डा विकासखण्ड में 5-5 बैंक ग्रामीण क्षेत्र में हैं। कीटनाशक विक्रय केन्द्र - कृषि फसलों की सुरक्षा हेतु कीटनाशक दवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। क्षेत्र में कुल कीटनाशक विक्रय केन्द्रों की संख्या 224 है। कासिमाबाद में 19, विरनों, मुहम्मदाबाद, जमानियां में 18-18 एवं भावरकोल विकासखण्ड में कीटनाशक विक्रय केन्द्रों की संख्या 9 है। बीज विक्रय केन्द्र - कृषि अवस्थापनात्मक तत्वों में उत्तम किस्म के बीज महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कृषि का आधुनिकीकरण करने के लिए अधिक उपज देने वाले बीज अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। कृषि के क्षेत्रों में आई क्रान्ति में नये बीजों तथा उन्नत किस्मों का निर्धारण किया गया। वर्तमान में ऐसे बीजों का विकास किया गया है जो प्रति हेक्टेयर अधिक मात्रा में उपज देने में सक्षम हैं। उन्नतशील बीजों ने अपनी उच्च उत्पादिता, उर्वरक के प्रति अनुकूल अनुक्रिया वौनी पौध ऊंचाई आदि विशेषताओं के कारण फसलों की उपज बढ़ाने की नवीन संभावनाओं का प्रादुर्भाव किया है। उन्नतशील बीजों के प्रयोग से हम खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सकते हैं। अधिक उत्पादन करके उसका निर्यात भी कर सकते हैं। उन्नतशील बीजों के विक्रय केन्द्रों की संख्या 242 है। कासिमाबाद विकासखण्ड में 22, जमानिया में 21, मनिहारी, मुहम्मदाबाद, वाराचवर जखनिया में 17-17 एवं भावरकोल विकासखण्ड में 10 बीज विक्रय केन्द्र है।

उर्वरक विक्रय केन्द्र - कृषि विकास प्रक्रिया में उर्वरक का महत्व इस तथ्य से ज्ञात होता है कि उनके उपयोग से उत्पादन अनुक्रिया काफी प्रभावित होती है। क्षेत्र में कुल उर्वरक विक्रय केन्द्रों की संख्या 232 है। गाजीपुर एवं जमानियां विकासखण्ड में 18-18, मुहम्मदाबाद, वाराचवर में 17-17, मरदह एवं सादात में 16-16 एवं सैदपुर विकासखण्ड में 10 उर्वरक विक्रय केन्द्र है। सरकारी समितियां - कृषि उत्पादन को अधिक उपयोगी और उपभोग्य बनाने के लिए सहकारी समितियों का होना अतिआवश्यक है। जब कृषकों को उनकी मेहनत के अनुरूप मूल्य प्राप्त नहीं होता है तो उनकी आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2013

है, जिससे उसे आगे दूसरी फसल के लिए धन की आवश्यकता होती है। धन को ऋण के रूप में दिलवाने की व्यवस्था इन संस्थाओं में होती है। सहकारी समितियों का विशेष महत्व होता है, जिससे उचित लागत पर कृषकों को बीज, कृषि यन्त्र व उपकरण खाद तथा उर्वरक की प्राप्ति हो जाती है। ये सहकारी समितियां उपभोक्ताओं की आवश्यकता की पूर्ति एवं किसानों की उपज का उचित मूल्य प्रदान करती है। क्षेत्र में सहकारी समितियों की कुल संख्या 182 है। कासिमाबाद विकासखण्ड में 17, जमानियां में 15, मनिहारी में 14 एवं सैदपुर विकासखण्ड में 6 सहकारी समितियां हैं। स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में अवस्थापनात्मक विकास को प्रभावित करने वाले चरों के माध्यम से विकास स्तर ज्ञात किया गया है। अवस्थापनात्मक विकास स्तर ज्ञात करने के लिए विकासखण्डानुसार चरों के मूल्यों का औसत एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात करके सूत्र द्वारा प्रत्येक चर का Z Score ज्ञात किया गया है।

$Z = X-X^{\&}$

X = विकासखण्ड अनुसार चरों का मूल्य

$X^{\&}$= चरों का औसत मूल्य

अवस्थापनात्मक विकास स्तर ज्ञात करने के लिए विकासखण्डानुसार सभी चरों के मूल्यों को जोड़कर अवस्थापनात्मक विकास स्तर ज्ञात किया गया है, जिसका परास 0 से धनात्मक 10.52 एवं 0 से ऋणात्मक 6.55 है। इसे तालिका संख्या 1.1 में प्रस्तुत किया गया है।

क्र.सं.र्	Z Score	विकास स्तर	विकास खण्डों की संख्या	विकास खण्डों का प्रतिशत
1	> + 8	अति उच्च	2	12.50
2	+4 ls +8	उच्च	3	18.75
3	0 ls +4	मध्यम	2	12.50
4	0 ls -4	मध्यम न्यून	5	31.25
5	> -4	न्यून	4	25.00

तालिका संख्या 1

गाजीपुर जनपद में अवस्थापनात्मक विकास स्तर अवस्थापनात्मक विकास स्तर का क्षेत्रीय प्रतिरूप - अवस्थापनात्मक विकास स्तर Z Score विधि से ज्ञात कर उसका क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप ज्ञात किया गया है।

अति उच्च विकास स्तर - इसके अन्तर्गत क्षेत्र के 2 विकासखण्ड जमानियां एवं मुहम्मदाबाद सम्मिलित है। जिसका विस्तार क्षेत्र के मध्यवर्ती गंगाखादर क्षेत्र में है। ये क्षेत्र नगर पालिका एवं प्रशासनिक हैं इसलिए अपने ग्रामीण क्षेत्रों में अवस्थापनात्मक सुविधाओं का विकास किया है।

उच्च विकास स्तर - इस वर्ग के अन्तर्गत क्षेत्र के 3 विकासखण्ड गाजीपुर, कासिमाबाद एवं मनिहारी सम्मिलित हैं। जिसका विस्तार क्षेत्र के मध्यवर्ती एवं उत्तरी भाग में है। यहां अवस्थापनात्मक सुविधाएं उच्च कोटि की पायी जाती हैं, जो ग्रामीण विकास में सहायक हैं।

मध्यम विकास स्तर - इसके अन्तर्गत क्षेत्र के 2 विकासखण्ड देवकली एवं जखनियां हैं, जिसका विस्तार उत्तरी एवं दक्षिणी-पश्चिमी भाग में है. यहां अवस्थापना सुविधाएं मध्यम स्तर की हैं, जो कृषि एवं औद्योगिक विकास में सहायक हैं।

मध्यम न्यून विकास स्तर - इसके अन्तर्गत क्षेत्र के 5 विकासखण्ड मरदह, बाराचवर, भावरकोल, भदौरा, एवं सैदपुर सम्मिलित है, जिसका विस्तार

क्षेत्र के उत्तरी-पूर्वी एवं पश्चिमी भाग गंगा खादर क्षेत्र में है। यहाँ अवस्थापनात्मक सुविधाएं अपेक्षाकृत निम्न स्तर की पायी जाती हैं। इन क्षेत्रों में संचार व्यवस्था, कीटनाशक, उर्वरक एवं बीज विक्रय केन्द्र सीमिति मात्रा में पाये जाते हैं। न्यून विकास स्तर - इसके अन्तर्गत क्षेत्र के 4 विकासखण्ड विरनां, करण्डा, सादात एवं रेवतीपुर सम्मिलित हैं, जिनका विस्तार क्षेत्र के उत्तरी एवं दक्षिणी-पष्चिमी भाग में है। यहां पर निम्न स्तर की अवस्थापनात्मक सुविधाओं के कारण क्षेत्र ग्रामीण विकास में काफी पिछड़ा हुआ है। स्पष्ट है कि क्षेत्र के मध्यवर्ती एवं दक्षिणी भाग नगरीय होने के कारण अवस्थापनात्मक सुविधाएं उच्च कोटि की पायी जाती है जिससे यहां अतिउच्च कोटि का विकास स्तर पाया जाता है। क्षेत्र के मध्यवर्ती एवं उत्तरी भाग में अवस्थापनात्मक विकास उच्चस्तर का उत्तरी एवं पष्चिमी भाग में मध्यम स्तर का, उत्तरी पूर्वी एवं उत्तरी पष्चिमी भाग में मध्यम न्यून स्तर का पाया जाता है। लेकिन दक्षिणी पष्चिमी एवं उत्तरी भाग में अवस्थापनात्मक सुविधाओं के कमी के कारण न्यून स्तर का पाया जाता है। अवस्थापनात्मक विकास नियोजन - क्षेत्र का त्वरित एव समन्वित विकास वहां विद्यमान अवस्थापनात्मक तत्वो के वितरण पर निर्भर करता है। इसलिए अध्ययन क्षेत्र में अवस्थापनात्मक विकास नियोजन के अन्तर्गत उन्नतषील बीजों, रासायनिक उर्वरकों का उचित उपयोग एवं सिंचन सुविधाओं का विकास किया जाये तो क्षेत्र में कृषि उत्पादन क्षमता मे वृद्धि करके ग्रामीणवासियो के जीवन स्तर मे वृद्धि की जा सकती है। इसी प्रकार यदि पारिवारिक उद्योग, पंजीकृत लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास के लिए अवस्थापनात्मक सुविधाओं का नियोजन करके क्षेत्रवासियों को रोजगार के नये अवसर उपलब्ध होने से प्रतिव्यक्ति आय मे वृद्धि के फलस्वरूप उनके सामाजिक-आर्थिक विकास का नवीन ढांचा तैयार हो सकेगा।

संदर्भ

1 वर्मा, शिवशंकर एवं शाही सुनील कुमार (1987)रू अवस्थापनात्मक तत्व एवं प्रादेशिक विकास एक सैद्धान्तिक अध्ययन उ.भा.भू.प. अंक 23 दिसम्बर 1987 पृष्ठ संख्या 35

2 यादव, अजीत कुमार (2008) सेवा केन्द्र एवं समन्वित ग्रामीण विकासः जनपद गाजीपुर का एक प्रतीक अध्ययन, अप्रकाषित शोध प्रबंध दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, पृष्ठ संख्या 95-98

3 द्विवेदी, अखिलेश्वर ,कुमार (2007) अवस्थापनात्मक तत्व एवं ग्रामीण विकास एवं संकल्पनात्मक अध्ययन उ. भा.भू.प. अंक 7 संख्या 1 जून 07 पृष्ठ संख्या 9

4 रेखा, तिवारी (1998): प्रतापगढ़ तहसील में केन्द्र स्थल एवं क्षेत्रीय अन्तः प्रक्रियायें उ.भा.भू.प. अंक 34 संख्या1,2 पृष्ठ संख्या 89-99